रानी लक्ष्मी बाई पर निबंध

झाँसी की रानी या रानी लक्ष्मी बाई की मायके मनु बाई थी। मनु बाई या मणिकर्णिका का जन्म 19 नवंबर 1828 को काशी (वाराणसी) में मोरोपंत तांबे और भागीरथी तांबे के घर हुआ था। लगभग 3-4 वर्ष की छोटी सी उम्र में, उन्होंने अपनी माँ को खो दिया और इस प्रकार, उनके पिता ने अकेले ही उनका पालन-पोषण किया। अपनी माँ की मृत्यु के बाद, मनु बाई और उनके पिता बिठूर चले गए और पेशवा बाजीराव के साथ रहने लगे।

रानी लक्ष्मी बाई के बचपन के दिन

मनु का रूझान बचपन से ही अस्त्र-शस्त्र चलाने की ओर था। इस प्रकार उन्होंने घुड़सवारी, तलवारबाजी और मार्शल आर्ट सीखी और इनमें महारत हासिल की। वह एक सुंदर, बुद्धिमान और बहादुर लड़की थी। मनु ने अपना बचपन पेशवा बाजीराव द्वितीय के पुत्र नाना साहब की संगति में बिताया। उनमें अदम्य साहस और सूझबूझ थी, जिसे उन्होंने एक बार नाना साहब को घोड़े के पैरों से कुचले जाने से बचाते हुए साबित किया था।

झाँसी के महाराजा से विवाह

मई 1842 में, मनु ने झाँसी के महाराजा, राजा गंगाधर राव नेवालकर से शादी कर ली और अब उन्हें रानी लक्ष्मी बाई के नाम से जाना जाता था। 1851 में, उन्होंने दामोदर राव को जन्म दिया, जिनकी मृत्यु तब हो गई जब वह केवल 4 महीने के थे। इस प्रकार, 1853 में, गंगाधर राव ने एक बच्चे को गोद लिया और उसका नाम अपने बेटे दामोदर राव के नाम पर रखा। लेकिन, दुर्भाग्य से, बीमारी के कारण

जल्द ही गंगाधर राव की मृत्यु हो गई और भारत के तत्कालीन गवर्नर-जनरल लॉर्ड डलहौजी ने इस गोद लेने से इनकार कर दिया।

रानी और चूक के सिद्धांत की नीति

डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स की नीति के अनुसार, अंग्रेजों ने उन सभी राज्यों को अपने कब्जे में ले लिया जिनके पास सिंहासन का कोई कानूनी उत्तराधिकारी नहीं था। इस प्रकार, लॉर्ड डलहौजी ने गोद लेने को मंजूरी नहीं दी और वह झाँसी पर कब्जा करना चाहता था। इससे लक्ष्मीबाई क्रोधित हो गईं लेकिन अंततः अंग्रेजों ने झाँसी पर कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने लॉर्ड डलहौजी के विरुद्ध कुछ याचिकाएँ दायर कीं लेकिन उनके सभी प्रयास निरर्थक साबित हुए।

1857 का विद्रोह

हालाँकि, 1857 में भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध छिड़ गया। विद्रोह जल्द ही दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, पंजाब और देश के अन्य हिस्सों में फैल गया। क्रांतिकारियों ने बहादुर शाह जफर को अपना राजा घोषित कर दिया। रानी लक्ष्मी बाई भी तुरंत विद्रोह में शामिल हो गईं और क्रांतिकारी ताकतों की कमान संभाल ली। उन्होंने 7 जून, 1857 को झाँसी के किले पर कब्ज़ा कर लिया और अपने नाबालिग बेटे दामोदर राव की ओर से एक रीजेंट के रूप में शासन करना शुरू कर दिया।

20 मार्च 1958 को , अंग्रेजों ने झाँसी पर पुनः कब्ज़ा करने के लिए सर ह्यू रोज़ के नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजी। उन्हें तांत्या टोपे का समर्थन प्राप्त था। यह एक भीषण युद्ध था जिसमें दोनों पक्षों को भारी क्षति हुई। अंततः अंग्रेजों ने धोखे से किले पर पुनः कब्ज़ा कर लिया। हालाँकि, रानी लक्ष्मी बाई अपने कुछ वफादार अनुयायियों के साथ भाग निकलीं और कालपी पहुँच गईं। जल्द ही तांत्या टोपे और राव साहब की मदद से उन्होंने जीवाजी राव सिंधिया से ग्वालियर का किला छीन लिया।

मौत

सिंधिया ने अंग्रेजों से मदद मांगी और उन्होंने स्वेच्छा से उनका समर्थन किया। युद्ध में वह बहादुरी और वीरता के साथ लड़ीं। वह एक अंग्रेज़ घुड़सवार द्वारा घायल हो गई और गिर गई। वह अपने बेटे को पीठ पर बाँधकर लड़ी और हाथ में तलवार लेकर मर गयी। उनके वफादार परिचारक रामचन्द्र राव ने तुरंत उनके शरीर को हटाया और चिता को अग्नि दी। इस प्रकार अंग्रेज उन्हें छू भी नहीं सके। वह 18 जून 1858 को ग्वालियर के कोटा-की-सराय में शहीद हो गईं ।

निष्कर्ष

भारतीय इतिहास में अभी तक झाँसी की रानी, रानी लक्ष्मी बाई जैसी बहादुर और शक्तिशाली महिला योद्धा नहीं देखी गई है। उन्होंने स्वराज प्राप्त करने और भारतीयों को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के संघर्ष में खुद को शहीद कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव का गौरवशाली उदाहरण हैं। वह बहुत से लोगों के लिए एक प्रेरणा और प्रशंसा हैं। इस प्रकार उनका नाम भारत के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा गया है और हमेशा हर भारतीय के दिल में रहेगा।

By : www.PDFSeva.Net